पाठ २ चींटी

कविता का सारांश

यह कविता चींटी के जीवन, उसकी कर्मठता, और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा करती है। कवि चींटी के अदम्य साहस, लगन, और मेहनत को प्रभु की पूजा के समान बताते हैं।

चींटी हर पल काम करती रहती है और श्रम का राग गाती रहती है। चाहे तूफान हो या वर्षा, चींटी अपना काम नहीं छोड़ती और अपना दाना ढूंढती रहती है। चींटी एक कुशल कलाकार है जो अपने घर को खूबसूरती से सजाती है।

छोटे शरीर के बावजूद, चींटी के इरादे बड़े होते हैं और वह कभी घबराती नहीं है। नन्हे पैरों से, चींटी पर्वत भी चढ़ जाती है।

चींटी अपने काम से हमें प्रेरणा देती है कि हमें भी कर्मठ और दृढ़ संकल्पी बनना चाहिए। चींटी हमें सिखाती है कि मेहनत ही प्रभु की पूजा है।

यह कविता हमें जीवन में कर्मठता, दृढ़ संकल्प, और लगन के महत्व को समझाती है। चींटी के जीवन से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयास करते रहना चाहिए।

शब्दार्थ :

श्रम : मेहनत

कड़ी धूप: तेज धूप

वर्षा: बारिश

दाना: अनाज का एक दाना

लती: ढोती हुई

सजाती: सजावट करती

तन: शरीर

इरादे: विचार, योजना

घबराती: डरती

नन्हे-नन्हे: बहुत छोटे

पैर बढ़ाकर: पैरों को आगे बढ़ाते हुए

पर्वत: पहाड़

अड़ जाती: रुक जाती

पूजा: भगवान की आराधना

प्रश्न - अभ्यास

बातचीत के लिए

1. आपने अपने आस-पास, घर और विधालय में कौन-कौन से जीव-जंतु देखे हैं?

उत्तर- हम अपने आस-पास कुत्ते, बिल्लियाँ, गाय, भैंस, बंदर, खरगोश, मच्छर, मक्खियाँ, तितलियाँ, मधुमक्खियाँ, छिपकली, सांप, कछुए, पक्षी (कौआ, कबूतर, तोता, चिड़िया), आदि जीव-जंतु देखते हैं।

2. आपने सबसे छोटा कौन-सा किट देखा और कहाँ देखा है?

उत्तर:- मैंने सबसे छोटा किट "मक्खी" देखा है।

3. आपने चींटी के अतिरिक्त और कौन-कौन से श्रम करने वाले जिव देखे हैं?

उत्तर:- मैंने चींटी के अतिरिक्त मधुमक्खियाँ, दीमक, तितलियाँ, मक्खियाँ, पक्षी, आदि को भी श्रम करते हुए देखा है।

4. नन्ही चींटी के बारे में अपना कोई अनुभव बताइए।

उत्तर:- एक बार मैंने एक नन्ही चींटी को भारी दाना उठाकर अपने घर ले जाते हुए देखा। दाना चींटी के आकार से कई गुना बड़ा था। चींटी बार-बार गिरती और उठती, लेकिन हार नहीं मानी। आखिरकार वह दाना अपने घर तक ले गई। उसकी लगन और मेहनत देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

कविता से आगे

1. नीचे कुछ वस्तुओं के चित्र बने हैं। बताइए, चींटियाँ किसे खाना चाहेंगी? उस पर गोला का चिन्ह बनाइए-

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए-

(क) घर को खूब सजाती चींटी।

(ख) पर्वत पर चढ़ जाती चींटी।

(ग) दाना चुनकर लती चींटी।

(घ) श्रम का राग सुनाती चींटी।

3. कविता के अनुसार चींटी हमको क्या-क्या करना सिखाती है? लिखकर बताइए-

उत्तर:- दृढ़ संकल्पी बनना, मेहनत करना, कभी हार न मानना, कलाकार बनना, कामयाबी पाना आदि।

भाषा की बात

1.कविता में चींटी को क्या-क्या कहा गया है-

उत्तर:- कर्मठ, दृढ़ संकल्पी, कलाकार, साहसी, धैर्यवान, मेहनती।

2. कितनी बार आई चींटी?

उत्तर:- कविता में आठ बार चींटी शब्द आया हैं।

3. आइए, ' चींटी ' कविता को आगे बढ़ाते हैं-

उत्तर:-

चीनी का दाना दिख जाए
उसको लेने जाती चींटी
है कितनी ही छोटी चींटी,
पर हिम्मत उसकी बड़ी।
नन्हे पैरों से चलती है,
भारी दाना उठाती है।
रस्ते में कई मुश्किलें,
पर चींटी हार नहीं मानती।
पत्थरों को पार करती है,
चढ़ाई उतरती है।
आखिरकार अपने घर पहुंचती है,
और दाना रखती है।

4. शब्दों को तुकबंदी-

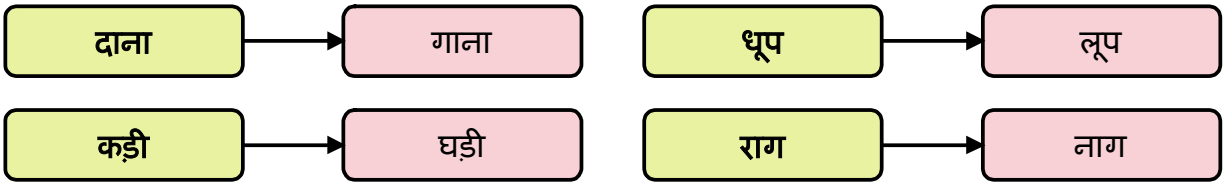

चींटी से भेंट

आपके घर के कई कोनों में चींटी आती-जाती है। एक दिन वह आपको रोककर आपसे कुछ कहती है।आपके और उसके बीच क्या-क्या बातें हुई होंगी, लिखिए-

आप - **नमस्ते चींटी! आज आप अकेली आई हैं?**
चींटी - नमस्ते अकेली तो मैं हमेशा ही रहती हूँ। मेरे पास परिवार नहीं होता।
आप - ऐसा कैसे? आप तो हमेशा झुंड में दिखाई देती हैं।
चींटी - वो झुंड मेरा परिवार नहीं होता। वो मेरे साथी होते हैं, जिनके साथ मैं काम करती हूँ।
आप - आप क्या काम करती हैं?
चींटी - हम खाना खोजते हैं, घर लाते हैं, और फिर रानी चींटी और बच्चों को खिलाते हैं।
आप - आप इतनी छोटी हैं, लेकिन आप इतना बड़ा काम करती हैं।
चींटी - हाँ, हम छोटे हैं, लेकिन हम मेहनती हैं। हमें पता है कि हमें क्या करना है।
आप - आप मेरे घर में क्यों आती हैं?
चींटी - आपके घर में खाने की चीजें होती हैं, जो हमें पसंद होती हैं।
आप - मैं आपको खाने-पीने की चीजें दूंगा, लेकिन आप मेरे घर में गंदगी नहीं करेंगी।
चींटी - हाँ, हम कोशिश करेंगे।
आप - धन्यवाद चींटी!